अदा करते हैं इस लिए लोगों को दुशवारी नहीं होती है और जमा्त का सवाब भी मिलता है। जबकि सुन्नी बरादरान के याहँ ऐसा नहीं है इस लिए उनको दुशवारी भी उठानी पड़ती है या नमाज़ छूट जाती है जिस की मिसाल नमाज़े जुमा है।

३. क्योंकि यह सुन्नत सुन्नी भाईयों में नहीं है इस लिए शीआ भाई इस को बाक़ी रखना चाहते हैं।

नतीजा:

ज़होर, अस्र, मग़रिब व ईशा की नमाज़ों को साथ अदा करना कुर्आन और सुन्नत की रू से है। और सुन्नी मुफस्सिर अल-नव्वी लिखते हैं के ''अगर एक सुन्नत कुर्आन व हदीस से साबित हो जाती है तो उसे इस लिए नहीं छोड़ना चाहिए कि कुछ ज़्यादातर या सारे लोगों ने उसे छोड़ दिया है।

(अलनववी शरफी सही मुस्लिम बेरूत १३९२१ है जि. न. ८ पे. न. ५६)

तो इससे साबित है कि सुन्नी बरादरान इस पर आमिल नहीं है मगर हमें इसको तर्क नहीं करना चाहिए।''

इस्लाम ने औरतों और मरदों को बात चीत से मना नहीं किया है लेकिन इनको एक तरीके से बात चीत इस्लान ने बताया है जिससे दोनों औरत और मर्द एक दूसरेकी इज़्ज़त करें। यानी तकवा एक दूसरे की इज़्ज़त और पहनावा इसलाम की रू से सही होना चाहिए, जैसे मुस्लिम औरतें सर पर इसकार्फ बान्धती है।

अपनी रूप की सेहत के लिए अपनी निगाहों को नामहरम पर पड़ने से रोके।

हिजाब का असल मक़सद है अपनी इसमत को ज़ाया न करना। इसीलिए हज़रत अली (अ.स.) ने कहा,

''आँखे दिल का हालबताती हैं और अकल का पैगम्बर होती हैं। इस लिए अपनी नज़रों को नीचे करो हर उस चीज़ से जो इमान के लिए सही न हो। किसी ऐसी लड़की को देखना जिसके कपड़े सही न हो। आदमी को फालतू ख्यालात की तरफ ले जाती है। जब इंसान कोई गलत काम ककरे और पछताए नतो उसके अंदर से मासूमियत चली जाती है। न सिर्फ माँ बाप को अपने बच्चों की तरफ से होशियार होना।

चाहिए बल्कि अपने आप पर भी नज़र रखना चाहिए। हिजाब का मतदब सिर्फयह नहीं के कपड़ों का परदा हो बल्कि नज़रों का भी परदा होना चाहिए और दूसरे सेक्स को बुरी निगाह से नहीं देखना चाहिए।''

शीआ पंजागाना नमाज़ एक साथ क्यों अदा करते हैं।

शीआ पंजागाना नमाज़ एक साथ क्यों अदा करते हैं।

शीआ पंजागाना नमाज़ो को अदा करते हैं लेकिन वह ज़ोहर और अस्र की नमाज़ो को एक के बाद एक अदा करते हैं और इसी तरह मग़रिब और इशा की नमाज़े भी एक साथ अदा करते हैं। यह तरीका कुर्आन व रसूल की सुन्नत की रूसे बिल्कुल सही है।

हनफी फिरके को छोड़कर बाकी सारे सुन्नी फिकें बी नमाज़ों को बारिश सफर डर या किसी और वजह के तहत एक साथ अदा करने की इजाज़त देती है।

हनफी फिरका किसी भी वक़्त यह इजाज़त नहीं देता कि नमाज़े एक साथ अदा की जाए। सिवाए मुजदल्फा में अदा करने वाली नमाज़ (दौराने हज) मालिकी, शाफई, हम्बली दारूल फिरका सब इस बात पर मुत्तहिद हैं कि जब इंसान सफर में हो तो नमाज़ेक साथ अदा कर सकता है।

लेकिन इनकी वजुहात अलग अलग हैं फिरका जाफिरया के तहत किसी भी दलील के बिना शीआ अपनी नमाज़े एक साथ अदा कर सकते हैं।

कुर्आन में अवकाते सलातः

इमाम फखरुद्दीन अल राज़ी मशहूर सुन्नी मुफस्सिरे कुर्आन सूरए १७ की ७८ वीं आयत को तफसीर यूं समझते हैं।

''के अगर हम ग़स्सक़ का तरजुमा करें तो यह वह वक़्त है जब अंधेरा रूब से पहले शुरू होता है यानी मग़रिब इसी तरह तीन अवक़ात का ज़िक्र है।

१. दोपहर २. मग़रिब ३. फज्र

इसका मतलब दोपहर में ज़ोहर और अस्र दोनों आती है और मगरिब की शुरू होने का वक़्त मग़रिब और इशा की नमाज़ों को अदा करने के लिए है तो इसका मतलब ज़ोहर और अस्र मग़रिब व इशा को एक साथ पढ़ा जा सकता है हाँलाकि इसका एक सबूत है कि बिनाकिसी वजह के एक साथ नमाज़ोंको नहीं पढ़ना चाहिए।

क्या रसूल नमाज़े एक साथ अदा करते थे।

१. इब्ने अब्बास से रवायत है कि रसूल्लाह ने मदीने में सात रकआत (मग़रिब व इशा) और (ज़ोहर व अस्र) आठ रकआत एक साथ पढ़ी।

(सही बुखारी इंगलिश ट्रासलेशन वेलयुम. १, किताब १०,न. ५३७, सही मुस्लिम) किताब अल-सलात बुक ४ बाब १०० इबादत की अदाएगी घर में १५२२)

२. अब्दुल्लाह शकीक से रिवायत है कि फ़रमाया इब्ने अब्बास एक रोज़ में दोपहर बाद से लेकर उस वक़्त तक हमसे खिताबत करते रहे जब तक के तारे न निकल आए इसी असना में एक आदमी बनू तमीम का आया और चिल्लाने लगा नमाज़ नमाज़ तो इब्ने अब्बास ने उससे कहा ''कि खुदा तुझे माँ से महरूम रखे तू मुझे सुन्नत सिखाता है फिर उन्होंने फ़रमाया मैने खुदा के रसूल को देखा है ज़ोहर और अस्र की नमाज़ों को एक साथ पढ़ते हुए और मग़रिब ैर इशा की नमाज़ों को एक साथ पढ़ते हुए ''अब्दुल बिन शकीक ने कहा मेरे दिमाग़ में कुछ शक आया तो मैने अबूद हुरैरा से पूछा और उन्होंने भी इस बात की तसदीक की।''

(सही मुस्लिम १५२३, १५.२४)

लेकिन क्या वह सफर डर और बारिश के बाएसे तो ऐसा नहीं था? बहुत सी रिवायत से दिखाती है कि रसूल मज़करा वजुहात के अलावा भी नमाज़े एक साथ अदा करते थे।

१. रसूल ने मदीने में रहते हुए सात (मग़रिब व इशा) और आठ (ज़ोहर, अस्र) नमाज़े पढ़ी।

(अहमद इब्ने हम्बल, अलमुसनद जि. १ सफा २२१)

२. रसूल (स.अ.) ने ज़ोहर और अस्र मग़रिब इशा को एक साथ अदा किया न किसी तरह का खौफ लाहक था न वह सफर में थे।

(मालिक इब्ने अनस अलमुवत्ताजिल्द १, पेज. १६१)

खुछ हालतों से यह मालूम होता है कि रसूल का नमाज़ो को एक साथ पढ़ना सिर्फ उम्मत की आसानी के लिए ही था।

१. इब्ने अब्बास से रिवायत है कि रसूललल्लाह मग़रिब व इशा ज़ोहर अस्रको एक साथ मदीने में अदा करते थे (बिना किसी ख़ौफ और बारिश के डर के) और इस हदीस के अलफाज़ ह है ''मैंने इब्ने अब्बास से पूछा के उन्होंने ऐसा क्यों किया तो इब्ने अब्बास ने कहा के इस लिए की उम्मत को ग़ैर ज़रूरी मुश्किले न दर्पेश हो।

(सही मुस्लिम ..... हदीस हद. १५२० सुनन अलतिरमिज़ी जि. १, पेज २६)

२. रसूल ने नमाज़ों की बिना डर या सफर की हालत में एक साथ अदा किया अबू ज़ुबैर कहते हैं कि मैने साद से पूछा ''उन्होंने ऐसा क्यों किया तो साद बोले की मैने इब्ने अब्बास से पूछा था वह यह फ़रमाते हैं कि ''उन्होंने ऐसा उम्मत की आसानी के लिए किया।

(सही मुस्लिम..... हदीस न. १५१६)

अगर इसकी इजाज़त भी है तो क्या करें।

१. लोग अपने कानों में मशगूल होते हैं और उनके अपने अपने मसाएल होते हैं खास कर उन मुलकों में जहाँ काम करने के तरीके इस्लामी नहीं है (निज़ाम) इसीलिए शीआ दोनों नमाज़ों कोेक साथ अदा करते हैं। कि न वह नमाज़ों को तर्क करें न काम से गफ़लत बरतें।

२. जब लोग जमाअतों में जमा होते हैं तब शीआ यूंही नमाज़ों को एक साथ